Semester-5 Hindi Paper no. 303

पेपर- आधुनिक हिन्दी गद्य का इतिहास (1950 तक)

पाठ्य क्रम

युनिट- 1 कथा साहित्य

1. कहानीः उद्भव और विकास
2. उपन्यासः उद्भव और विकास
3. चंद्रधर शर्मा गुलेरीः कहानीकार के रुप में
4. बलचनमा (नागार्जुन)- कृति परिचय

युनिट- 2 नाट्य साहित्य

1. नाटकः उद्भव और विकास
2. एकांकीः उद्भव और विकास
3. भुवनेश्वरः एकांकीकार के रुप में
4. अंजोदीदी (उपेन्द्रनाथ अश्क) – कृति परिचय

युनिट – 3 निबंध एवं आलोचना

1. निबंधः उद्भव और विकास
2. आलेचनाः उद्भव और विकास
3. बालमुकुन्द गुप्तः निबंधकार के रुप में
4. हिन्दी साहित्य की भूमिका(आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी)- - कृति परिचय

युनिट – 4 अन्य गद्य विधाएँ

1. संस्मरणः उद्भव और विकास
2. रेखाचित्रः उद्भव और विकास
3. जीवनीः उद्भव और विकास
4. मेरी असफलताएँ (बाबू गुलाबराय) – कृति परिचय

सहायक गंथः

1. आधुनिक साहित्य – नंददुलारे वाजपेयी
2. हिन्दी गद्यः विन्यास और विकास – रामस्वरुप चतुर्वेदी
3. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ. ओमप्रकाश गुप्त
डॉ. विरेन्द्रनारायणसिंह

4. हिन्दी साहित्य का इतिहास – सं. डॉ. नगेन्द्र

कहानी की परिभाषाः

- अमेरिका के कवि-आलोचक-कथाकार 'एडगर एलिन पो' के अनुसार कहानी की परिभाषा इस प्रकार हैः

"कहानी वह छोटी आख्यानात्मक रचना है, जिसे एक बैठक में पढ़ा जा सके, जो पाठक पर एक समन्वित प्रभाव उत्पन्न करने के लिये लिखी गई हो, जिसमें उस प्रभाव को उत्पन्न करने में सहायक तत्वों के अतिरिक्त और कुछ न हो और जो अपने आप में पूर्ण हो।"

- रामदेव आचार्य कहानी का अर्थ देते हुए लिखते है कि

"कहानी का अर्थ है, जिन्दगी के एक हिस्से से अन्तरंग पहचान जताना। अनुभव की दराजों से सही वस्तु चुनना और उसे शिल्प की तल्खी देना।"

- प्रेमचंद की परिभाषाः

कहानी (गल्प) एक रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली, उसका कथा-विन्यास, सब उसी एक भाव को पुष्ट करते हैं। उपन्यास की भाँति उसमें मानव-जीवन का संपूर्ण तथा बृहत रूप दिखाने का प्रयास नहीं किया जाता।

हिन्दी कहानी का विकास

कहानी कहने और सुनने की प्रवृति बहुत आदिम है। भारतीय साहित्य में वैदिक साहित्य से लेकर पुराणों-उपनिषदों, जातक कथाओं और पंचतंत्र आदि में कहानी के पुराने स्वरुप को देखा जा सकता है।

हिन्दी कहानी का उद्भव और विकास

- **कहानी का उद्भव**

रानी केतकी की कहानी- इंसा अल्ला खाँ (1803), प्रणयिनी परिणय -किसोरीलाल गोस्वामी(1887), इन्दुमती- किसोरीलाल गोस्वामी, दुलाइवाली- बंगमहीला, ग्यारह वर्ष का समय – आ. रामचंद्र शुक्ल

हिन्दी कहानी का विकास

1
- **प्रथम चरण**
- **(सन् 1870 से 1915 तक)**

2
- **द्वितीय चरण**
- **(सन् 1915 से 1935 तक)**

3
- **तृतीय चरण**
- **(सन् 1935 से 1950 तक)**

हिन्दी उपन्यास का उद्भव और विकास

हिन्दी उपन्यास आधिनिक युग की देन है । हिन्दी साहित्य में उपन्यास साहित्य महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है । हिन्दी उपन्यास में प्रेमचंद के एक सशक्त धुरी माना जाता है। हिन्दी उपन्यास उद्देश्य प्रधान है ।

हिन्दी उपन्यास का विकास

1

- प्रेमचंद पूर्व युग
- (सन् 1882 से 1918 तक)

2

- प्रेमचंद युग
- (सन् 1918 से 1937 तक)

3

- प्रेमचन्दोंत्तर युग
- (सन् 1937 से 1950 तक)

प्रेमचंद पूर्व युग
(सन् 1882 से 1918 तक)